

इक्कीसवीं सदी के द्वार पर: विज्ञान, समाज और मानव की वास्तविकता

अध्याय १ से ५ का वैज्ञानिक एवं दार्शनिक विश्लेषण — समस्या और समाधान की रूपरेखा

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९१० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीरग ही और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा और आप के बीच में पहुँचना मेन बच्चों के करियँय चाहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर बोर बच्चों से कहियेगा कि मेरे रूप में जन-जन का पहुँचाने के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

बीसवीं सदी की
उपलब्धियाँ: विज्ञान
और बुद्धिवाद

सुविधा-साधनों के
नये द्वार

बुद्धि का विकास

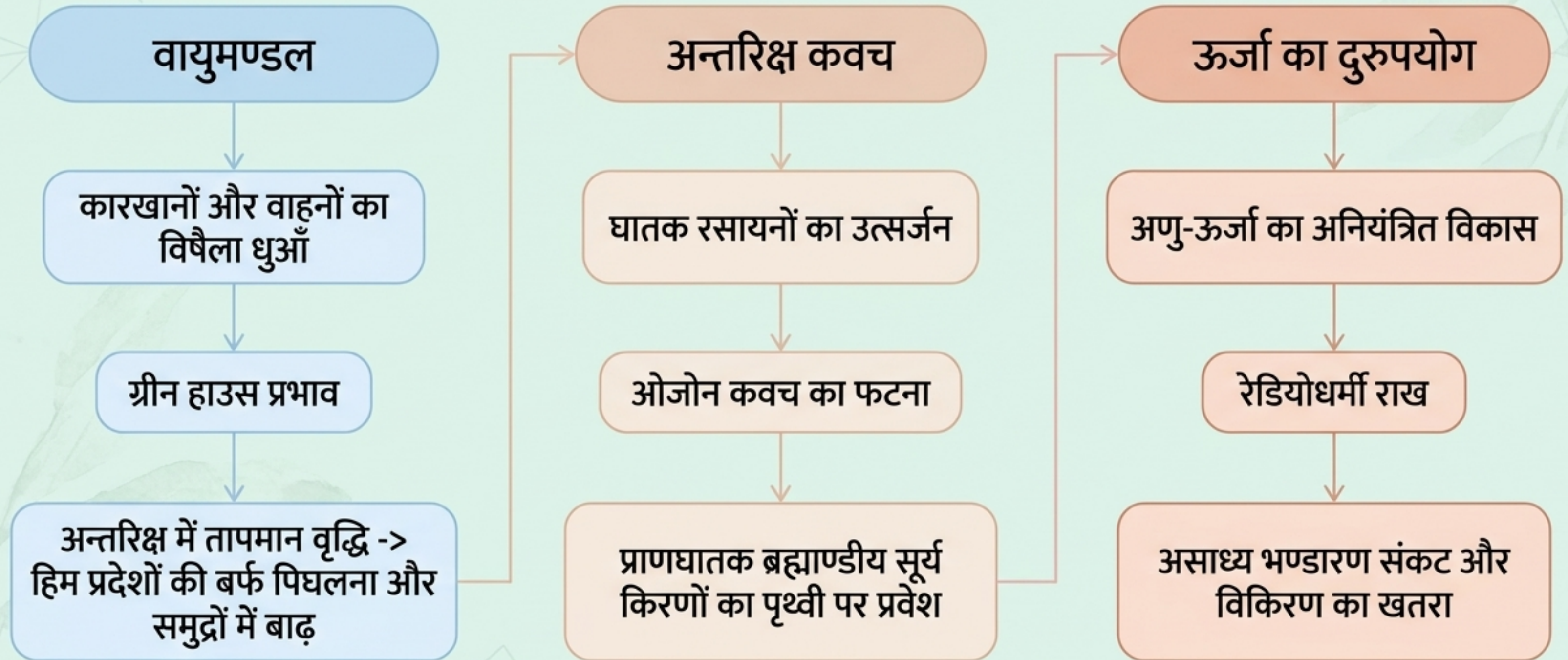
दुरुपयोग का क्रम

आर्थिक उपनिवेशवाद

अतिरिक्त उत्पादनों
के लिए युद्ध

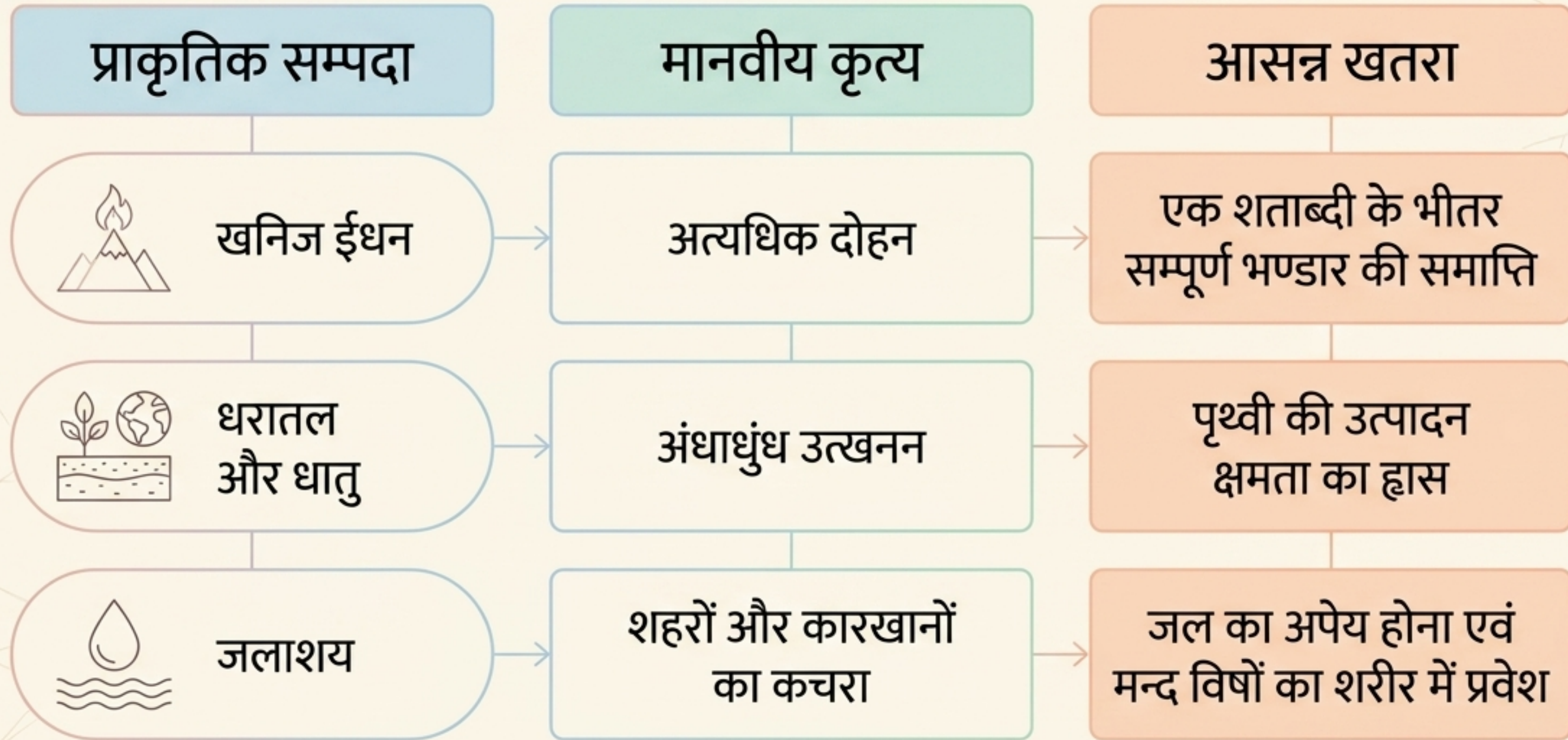
कुटीर उद्योगों का पतन
एवं बेरोजगारी

प्रकृति के साथ खिलवाड़: तीन वैज्ञानिक संकट



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के

पृथ्वी की घटती क्षमता: एक नैदानिक अवलोकन



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा मिरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

नैतिक पतन का मूल कारण: प्रत्यक्षवाद का उदय



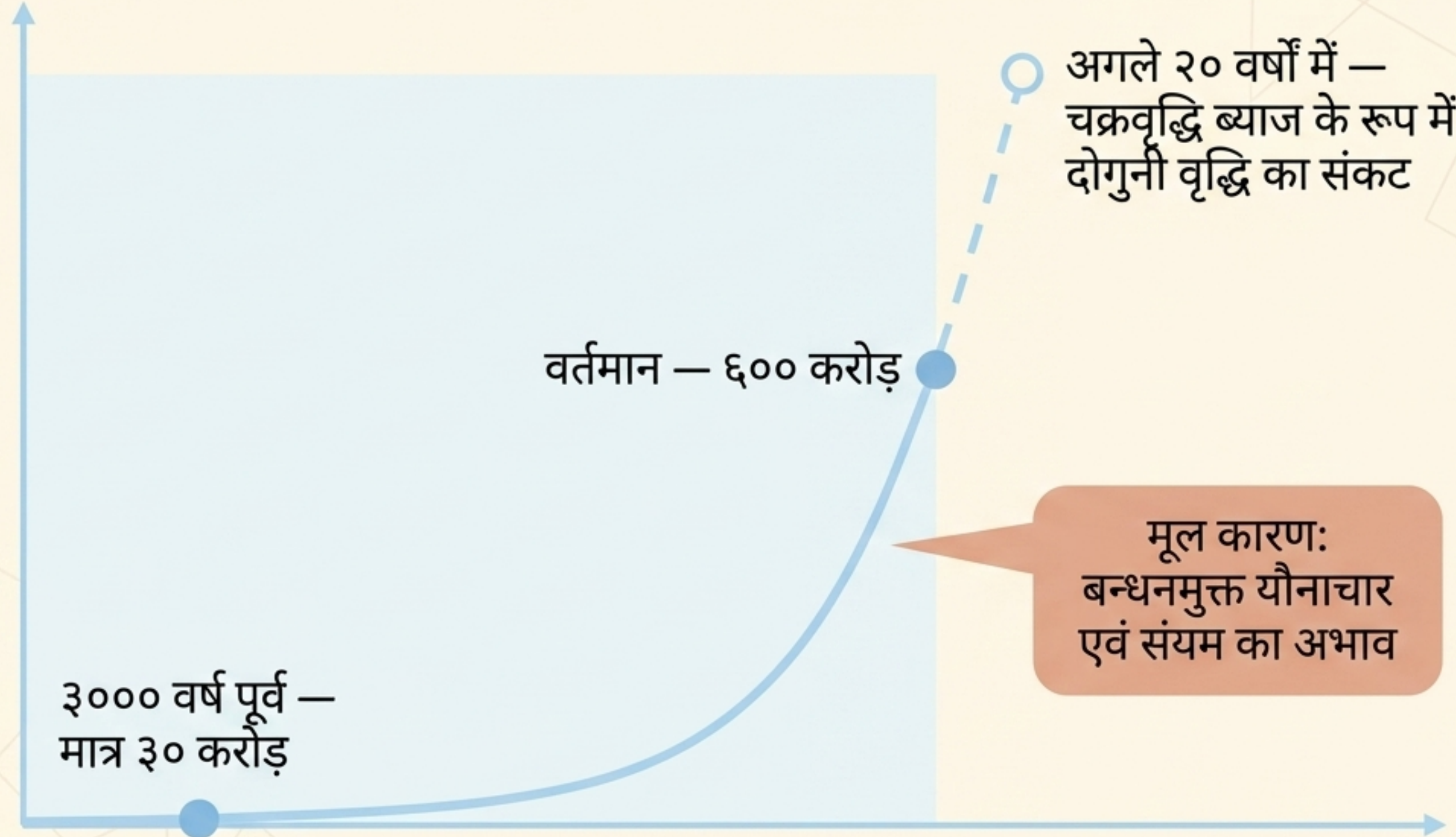
स्वेच्छाचार का विस्तार: टूटी हुई मर्यादाएँ

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदपूति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच
आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि आप सबसे कहियेगा। —
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाताने
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

जनसंख्या विस्फोट: अनियंत्रित वृद्धि का गणित



सीमित भूमि vs असीम जनसंख्या का चक्रव्यूह

बढ़ती आबादी के लिए आवास एवं कृषि भूमि की माँग

वनों की
अंधाधुंध
कटाई

वायु प्रदूषण की
रोकथाम बन्द

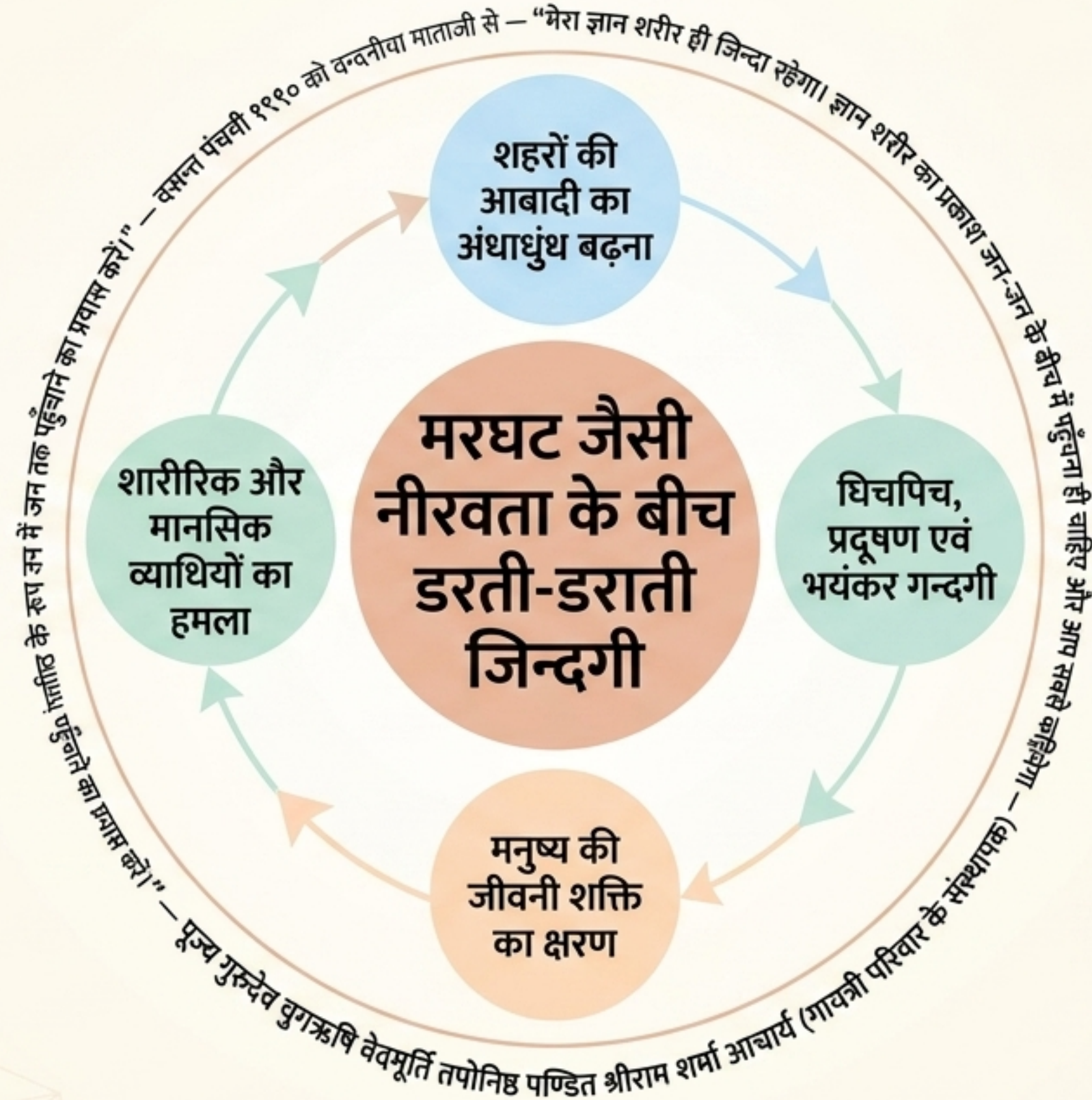
जमीन में जड़ों की पकड़
समाप्त -> भू-क्षरण, बाढ़
और रेगिस्तान का निर्माण

नदियों की गहराई
कम होना -> भयंकर
जल संकट

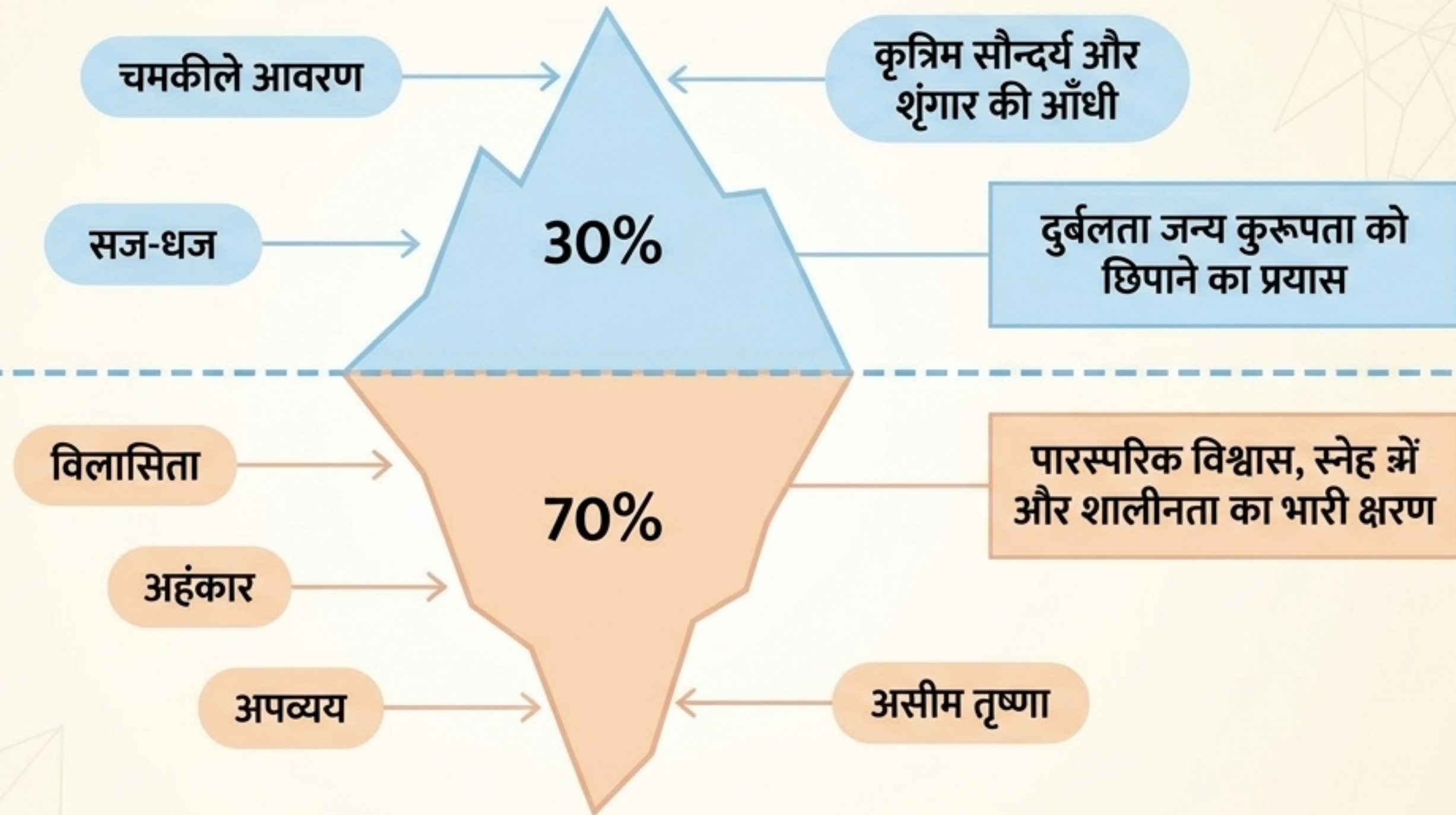
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान
शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान
शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

शहरीकरण और नरक तुल्य जीवन का दुष्चक्र



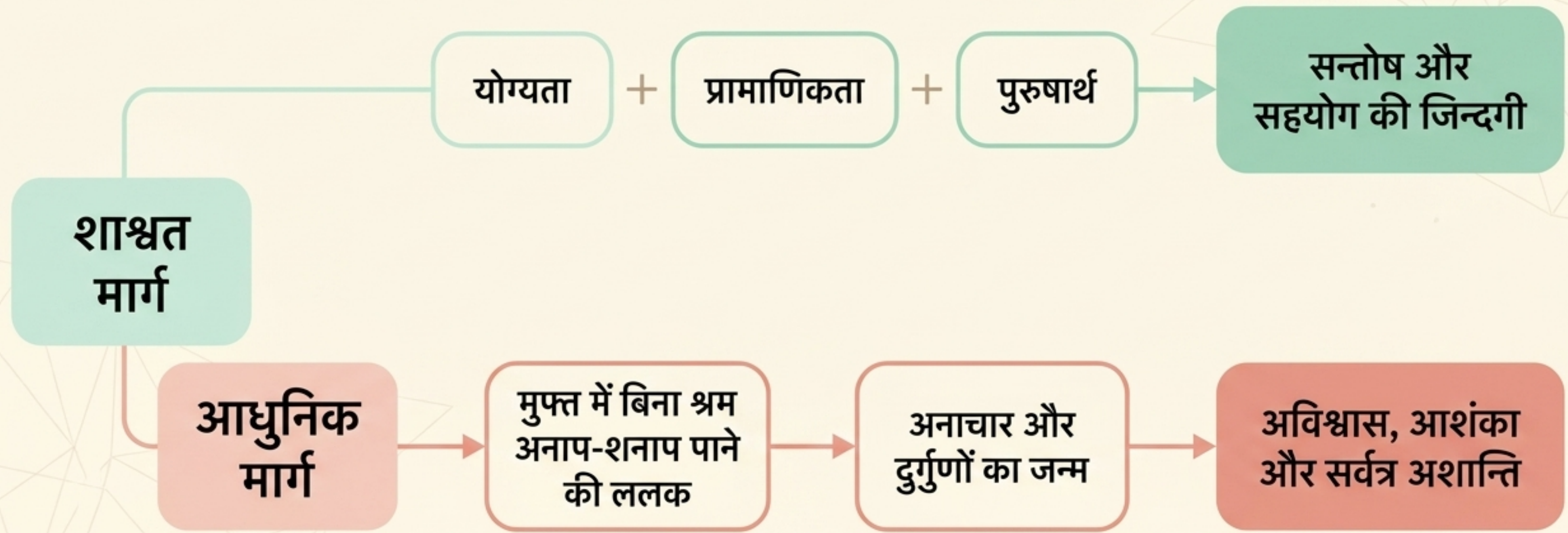
आधुनिक जीवनशैली: कृत्रिम सौन्दर्य और आन्तरिक खोखलापन



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को रें पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संरक्षक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सफलता का मार्ग: शाश्वत नियम बनाम आधुनिक पतन



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

महाविनाश की ओर धकेलता तंत्र

विश्व के आधे
प्रतिभाशाली
लोग, पूँजी और
संसाधन

युद्ध और आयुध निर्माण
के उद्योगों में नियोजित

परमाणु आयुधों
द्वारा पृथ्वी के
महाविनाश का
खतरा

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

आयुध उत्पादन का अनसुलझा संकट

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

महाविनाशकारी आयुधों का विशाल भण्डार

यदि युद्ध में उपयोग हुआ

पृथ्वी पर जीवन की
सम्पूर्ण समाप्ति

यदि युद्ध नहीं होता है

भयंकर आर्थिक और साधन संकट:
इस विशाल उत्पादन और इसमें लगी
जन-शक्ति का क्या किया जाए?

आधुनिक संकटों का महाजाल: एक सम्पूर्ण दृश्य



एक समस्या का हल ढूँढ़ते-ढूँढ़ते दस नई विपन्नताएँ सामने खड़ी हो जाती हैं।

वास्तविकता जिसे नकारा नहीं जा सकता

वर्तमान वास्तविकता

सभ्यता के आवरण में मनुष्य
'प्रेत-पिशाच' स्तर का बन गया है।

जनसमुदाय रोगी, अभावग्रस्त,
और आतुर है।

बारूद के ढेर पर बैठी मानवता।

किंकर्तव्यविमूढ़ता (विचारशील की स्थिति)



हर विचारशील व्यक्ति चिंतित है कि भविष्य में
क्या घटित होगा? किन्तु स्रष्टा इस विनाश को
मूक दर्शक बनकर नहीं देख सकता।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)